IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रायोजना विधि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन।

संगीता यादव
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

डॉ. सतीश मंगल
सहायक आचार्य
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय
सी.टी.ई. जामडोली,जयपुर

सार :–

प्रस्तुत शोध में सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रायोजना विधि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव अध्ययन किया गया है । शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है । शोध अध्ययन हेतु पूर्व परीक्षण – परीक्षणोत्तर समकक्ष समूह अभिकल्प का चयन किया गया है । शोध अध्ययन में जलोटा के सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण को प्रयुक्त कर नियंत्रक व प्रायोगिक समकक्ष समूह निर्मित किये गये है। शोध न्यादर्श में उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 8 के 80 विद्यार्थियों को लिया गया है। शोध सांख्यिकी में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध निष्कर्षो में पाया गया कि सामजिक विज्ञान शिक्षण में प्रायोजना विधि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक व्यवहार पर परम्परागत विधि के सापेक्ष सार्थक अन्तर पाया जाता है।

संकेताक्षर :– प्रायोजना विधि, सामाजिक व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक विज्ञान।

प्रस्तावना :–

शिक्षा सभ्यता का पैमाना है, सफलता और आत्मनिर्भरता की सीढ़ी है । शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने जीवन के विविध लक्ष्यों की पूर्ति करता है । वर्तमान समाज द्वारा राष्ट्र के आकांक्षा के अनुरूप भावी पीढ़ी को तैयार करने हेतु पाठ्यक्रम निर्माण किया जाता है । पाठ्यक्रम की पाठ्यवस्तु शिक्षण विषयों के रूप में बालक के समक्ष प्रस्तुत की जाती है । भारत में उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय सामान्य शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है । इस विषय के अन्तर्गत शिक्षार्थियों हेतु देश–काल और संस्थानों के परे प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के साथ अन्योन्य क्रिया की व्यापक समझ समाहित है। सामाजिक विज्ञान विषय में भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र विषयों का समावेश है। इसलिए सामाजिक विज्ञान में शैक्षणिक प्रक्रियाएँ विचारो, अनुभवों को साझा

करने वाले एवं मूल्यांकन करने वाली होनी चाहिए। अतः सामाजिक विज्ञान विषय की शिक्षण विधाओं के संदर्भ में यह तथ्य ध्यान रखने योग्य है कि वह विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु का स्वयं अन्वेषण हेतु करने के लिए प्रेरित कर सके एवं सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जिज्ञासोन्मुखी एवं रूचिकर बना सके।

समस्या का औचित्य :–

प्रायोजना विधि के माध्यम से सामाजिक विज्ञान विषय को नीरस व उबाऊ विषय के स्वरूप से बाहर जीवन के उदाहरणो, प्रक्रियाओं से रूचिकर बनाया जा सकता है व उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में प्रायोजना विधि के संदर्भ में शोध अध्ययन भी नही के बराबर है । इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रायोजना विधि के प्रभाव को विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक व्यवहार पर देखने का प्रयास किया, जिससे शिक्षण–प्रक्रिया में शैक्षिक विधाओं के चयन में सरलता एवं सहयोग हो ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पूर्व परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
2. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पश्च परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
3. परम्परागत विधिएवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध परिकल्पनाऐं :–

1. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पूर्व परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।
2. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पश्च परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है ।
3. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।

शोध अध्ययन का परिसीमन :–

- प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक ही सीमित है ।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श सामाजिक विज्ञान विषय के 80 विद्यार्थियों तक सीमित है ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 8 के 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में प्रयुक्त किया गया है ।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

1. सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण
2. विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार मापनी
3. सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि परीक्षण

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक शोध विधि उपयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान 2. मानक विचलन 3. टी–परीक्षण

प्रदत्तो का विश्लेषण :–

परिकल्पना 1 : – परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पूर्व परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी : 1

समूह Variable	संख्या N	मध्यमान X	मानक विचलन SD (σ)	टी वेल्यू t value	सार्थकता Significance
नियंत्रक समूह	38	24.84	4.22	0.63	स्वीकृत
प्रायोगिक समूह	37	25.62	6.16		

स्वतंत्रता का अंश (df) = 71
.05 स्तर पर मानक मान – 1.99
.01 स्तर पर मानक मान – 2.65

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों नियंत्रक समूह एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के परीक्षण के आधार पर पूर्व प्राप्तांकों के मध्य टी ज गुणांक का मान गणना से 0.63 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 71 पर 0.01 तथा 0.05 स्तर के दोनों मानक मानों से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पूर्व परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 2 : – परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पश्च परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी : 2

समूह Variable	संख्या N	मध्यमान X	मानक विचलन SD (σ)	टी वेल्यू t value	सार्थकता Significance
नियंत्रक समूह	35	72.37	7.58	6.24*	अस्वीकृत
प्रायोगिक समूह	35	82.68	6.25		

स्वतंत्रता का अंश (df) = 68

*.05 स्तर पर मानक मान – 1.99

*.01 स्तर पर मानक मान – 2.65

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों नियंत्रक समूह एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के परीक्षण पूर्व प्राप्तांकों के मध्य टी ज गुणांक का मान गणना से 6.24 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 68 पर 0.01 तथा 0.05 स्तर के दोनों मानक मानों से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अर्थात परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पश्च परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

परिकल्पना 3 : – परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी : 3

समूह Variable	संख्या N	मध्यमान X	मानक विचलन SD (σ)	टी वेल्यू t value	सार्थकता Significance
नियंत्रक समूह	35	140.20	8.49	3.11*	अस्वीकृत
प्रायोगिक समूह	35	146.68	8.89		

स्वतंत्रता का अंश (df) = 68

*.05 स्तर पर मानक मान – 1.99

*.01 स्तर पर मानक मान – 2.65

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों नियंत्रक समूह एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्य टी ज गुणांक का मान गणना से 3.11 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 68 पर 0.01 तथा 0.05 स्तर के दोनों मानक मानों से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की

जाती है। अर्थात परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :–

1. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पूर्व परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण का सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में पश्च परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. परम्परागत विधि एवं प्रायोजना विधि पर आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों से शिक्षको को सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षणिक प्रक्रिया में शिक्षण विधा चयन में सहयोग प्राप्त होगा ।
2. विद्यार्थियों के अधिगम स्वरूप प्राप्त ज्ञान को बाह्य जीवन परिस्थितियों से जोड़ने में सहायक।
3. विद्यार्थियों में समानता एवं समूह कार्य करने की प्रवृत्ति पर बल मिलता है।
4. विद्यार्थियों के लिए कक्षा–कक्ष का वातावरण रचनात्मक एवं सहयोगात्मक बनाने में सहायक है।

संदर्भ :

मित्तल संतोष (2008) : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।

कुप्पुस्वामी, बी. (1972) : समाज मनोविज्ञान : एक परिचय, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़ ।

भार्गव, महेश (1997) : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हरि प्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, आगरा ।

सृजन शोध विशेषांक (2013) : श्री अग्रसेन स्ना. शिक्षा महाविद्यालय जामडोली, जयपुर ।

वेबसाईट्स

1- www.shodganga.inflibnet.ac.in
2- www.ssmrae.com
3- http://www.autodesk.com/foundation